बाल दिवस पर विशेष..

बच्चों की दुनिया

✻ ब्रह्माकुमारी शीला, एलगिन रोड, कोलकाता

(नेपथ्य में आवाज आ रही है)

हम बच्चे हैं, तो क्या हुआ? हममें भी भावनाएँ भरी हैं। हम उन्हें व्यक्त करना चाहते हैं। हमें बहुत कुछ सुनाने को रहता है, कोई सुनके तो देखे। किसे सुनाएँ? कोई हमारी बात समझ नहीं पाता और अपनी सुनाने लगता है। माता-पिता को व्यस्त और परेशान देखता हूँ तो रुक जाता हूँ। पता नहीं उन्हें मेरी बातें अच्छी लगेंगी कि नहीं, कहीं वे क्रोधित हो गए तो? दुखी हो गए तो? इस तरह के विचार अन्दर चलने लगते हैं। इसलिए हम अपनी बातें दिल में ही रख लेते हैं। आज हम ने एक योजना बनाई है कि हम सब बच्चे मिलकर अपनी बात परमात्मा को सुनाएँगे। परमात्मा शिव बाबा को सखा बनाकर, अपने मन की बातें कहेंगे। बाबा आनन्दित होंगे हमारी बातें सुनकर। बाबा ''हरी'' *(जल्दबाजी)* में नहीं हैं और बाबा के पास ''वरी'' *(चिंता)* नहीं है।

यहाँ खुला मंच है। कोई बन्धन नहीं है। हम बच्चे निस्संकोच बातें करेंगे। एक-एक बच्चा मंच पर आएगा, अपना नाम बताएगा, अपने मन की बात परमात्मा को बताएगा। एक से अधिक बातें भी बता सकता है, इसकी छूट है पर ध्यान रखना है अपने साथियों का। उन्हें भी परमात्मा पिता से कुछ कहना है।

(पर्दा हटता है, एक बड़े-से कमरे में सात बच्चे कुर्सियों पर बैठे हैं। सामने एक टेबल है। सुबह के समय बच्चे तरोताजा हैं। रविवार की स्कूल की छुट्टी है। बच्चों ने अपना नाम मनपसन्द साज पर रखा है। वस्तुत: वे हैं भी साज ही, बस, उन्हें छेड़ना सही ढंग से आना चाहिए। उनके नाम हैं - 1.शहनाई 2.बैन्जो 3.सितार

4.गिटार 5.तबला 6.सरोद 7.वायलीन। सबसे पहले शहनाई अपनी बात कहने के लिए उठती है)

शहनाई – बाबा, मैंने पूछा, ''नानी इतने सारे देवी-देवताएँ क्यों हैं? एक होते तो कितना अच्छा होता।'' मेरी बात सुनकर नानी आश्चर्यचकित है, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया मेरे प्रश्न का पर उनके साथ एक और महिला बैठी हैं। उन्हें मेरा प्रश्न करना अच्छा नहीं लगा। वो मेरे पीछे पड़ गई और रोष में बोली, ''भगवान के लिए ऐसे बोलते हैं क्या? ऐसे नहीं बोलना चाहिए, तुमसे भूल हुई है, चलो देवी-देवताओं से माफी मांगो।'' बाबा, मुझे माफी मांगनी पड़ी पर पता नहीं पड़ा कि मेरी गलती क्या थी?

''हमारे गाँव में तो सूरज चाचू इधर निकलते हैं, आपके दिल्ली में उधर क्यों?'' मैंने जैसे ही यह कहा, वहाँ बैठे सभी हंसने लगे। मैंने कुछ गलत पूछ लिया क्या? मन में प्रश्न उठा। इतने में चाची आगे आई, मेरे को दुलारा और प्यार से कहा, ''बेटे, सूरज चाचू तो पूर्व से ही निकलते हैं पर घर की दिशा अलग हो सकती है।'' मेरी

समझ में बात आ गई और लगा, चाची कितनी बुद्धिमान हैं।

(ओम शान्ति कहकर शहनाई ने अपनी बात पूरी की, अब बैन्जो की बारी है)

बैन्जो – बाबा, मेरी माँ बहुत अच्छी हैं, दादी भी बहुत अच्छी हैं। दोनों मुझे बहुत प्यार करती हैं। मैं भी दोनों को बहुत प्यार करता हूँ पर पता नहीं क्या बात है, माँ और दादी दोनों एक-दूसरे से खिंचे-खिंचे रहते हैं। वो तो इतने बड़े हैं, क्यों नहीं समझ पाते कि इससे मुझे दुख होता है। मुझे कितनी अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं, फिर दोनों प्यार से क्यों नहीं रहते? मैं उन दोनों में एक-दूसरे के लिए प्रेम, सम्मान और सद्भावना देखना चाहता हूँ।

बाबा, पंडित जी मेरे घर में आकर 'सत्यनारायण' की पूजा कराते हैं। कल मैंने उन्हें देखा कि पान की दुकान पर खड़े होकर बीड़ी पी रहे थे। मैं तो हक्का-बक्का हूँ। घर पर आकर कितना नियम-निष्ठा दिखाते हैं और खुद!

बाबा, आपको मालूम है, मेरे मामा जी 'स्पॉटलैन्डिंग' में भारत में सर्वप्रथम आये हैं। इसके लिए उन्हें प्रधानमंत्री से अवार्ड भी मिला है। उन्हें एक अच्छी एयरलाइन्स में नौकरी भी मिल गई है पर मेरी नानी एवं घर के अन्य वरिष्ठ सदस्यों ने उन्हें पायलट की नौकरी में जाने से मना कर दिया है। उनका कहना है कि उड़ान की नौकरी खतरनाक होती है। वे ऐसा क्यों सोचते हैं? मुझे तो हवाई जहाज में घर जैसी सुरक्षा लगती है। फिर उन्होंने मामा का दिल क्यों तोड़ दिया? मैंने कल रात मामा जी को अकेले में रोते देखा, बाबा बहुत बुरा लगा। ओम शान्ति बाबा।

(ओम शान्ति कहकर बैन्जो ने अपनी बात पूरी की, अब सितार की बारी है)

सितार – बाबा, सुबह-सुबह उठना मुझे अच्छा नहीं लगता। देर तक सोना अच्छा लगता है पर पापा, जो स्वयं साढ़े तीन बजे भोर में उठते हैं, मुझे पांच बजे उठा देते हैं। पापा बहुत प्यार से उठाते हैं पर मुझे अच्छा नहीं लगता है।

बाबा, पहले दादी बहुत देर से उठती थी। अभी तो बहुत जल्दी उठ जाती हैं और ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर जाती हैं। मैं जब स्कूल जाने के लिए सुबह में उठता हूँ तो उससे पहले दादी सेन्टर जा चुकी होती हैं। वे कभी-कभी मुझे मुरली सुनाती हैं, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है और नींद आ जाती है पर पता नहीं क्यों आज मम्मी ने कहा कि तुम मुरली मत सुनो, वह तेरे लिए अच्छा नहीं है। मम्मी ने ऐसा क्यों कहा बाबा? मैं द्वंद्व में हूँ कि क्या करूँ? यह बात दादी को कैसे कहूँ?

बाबा, आज मम्मी को झूठ बोलते सुना तो परेशान हूँ। क्या बड़े भी झूठ बोलते हैं? वे किसी आन्टी से फोन पर बात कर रही थी। कह रही थी कि आज तबीयत ठीक नहीं है, थोड़ा रेस्ट में हूँ पर बाबा मम्मी तो ठीक हैं और गाड़ी लेकर कहीं जाने वाली हैं। उन्होंने ऐसा क्यों कहा? मुझे अच्छा नहीं लगा।

(ओम शान्ति कहकर सितार ने अपनी बात पूरी की, अब गिटार की बारी है)

गिटार – बाबा, हम दोनों भाई एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं, मैं बड़ा हूँ, अपने भाई को सदैव नीचा दिखाने की कोशिश करता हूँ, इससे मुझे अच्छा लगता है। वह भी पढ़ाई में अच्छा है पर लोग मेरी तारीफ ज्यादा करते हैं। उसकी कोई पूछ नहीं है, मेरे माता-पिता भी मेरे ऊपर ज्यादा ध्यान देते हैं, यह मुझे और अच्छा लगता है।

बाबा, आज मैंने अपने घर के सेवक की जेब से बीस रुपये चुरा लिये और उनसे गोलगप्पे खा लिये। सेवक अपने रुपयों की तलाश कर रहा है, सबसे पूछ रहा है। मेरे ऊपर तो उसका सन्देह भी नहीं जाएगा। मेरे को बहुत बुरा लग रहा है। सॉरी बाबा, अब कभी भी मैं चोरी नहीं

करूँगा।

बाबा, जब मैं स्कूल से वापस घर जाता हूँ तो घर के सेवक मेरे लिए खाना परोसते हैं। मेरी माँ के यह आराम का समय होता है। मेरी इच्छा होती है, मेरी माँ गरम-गरम फुलका मेरी थाली में रखती। सुना है, माँ के हाथ का खाना बड़ा स्वादिष्ट होता है पर ऐसा मेरे भाग्य में क्यों नहीं है बाबा।

(ओम शान्ति कहकर गिटार ने अपनी बात पूरी की, अब तबले की बारी है)

तबला – बाबा, मैं होस्टल में रहकर पढ़ाई करता हूँ। मेरे माता-पिता जहाँ रहते हैं वहाँ कोई अच्छा स्कूल नहीं है इसलिए उन्हें मुझे बाहर भेजना पड़ा। मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है क्योंकि उनके सामने भी लाचारी है। पर बाबा मुझे होस्टल में रहना अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी मन में आता है काश! उनकी नौकरी बड़े शहर में होती तो मुझे होस्टल में नहीं जाना पड़ता।

बाबा, माँ-पापा का झगड़ा करना एकदम से अच्छा नहीं लगता है। मैं उन्हें कहना चाहता हूँ कि आप दोनों हँसते हुए अच्छे लगते हो पर यह बात उन्हें कब कहूँ? कैसे कहूँ? प्यारे बाबा, आप गाइड करना। मैं तो फिर भी आपका बच्चा ही हूँ ना!

(ओम शान्ति कहकर तबले ने अपनी बात पूरी की, अब सरोद की बारी है)

सरोद – बाबा, मेरी नन्ही-सी बहन बहुत प्यारी है। मैं उसे देख बहुत खुश हूँ पर घर के लोग खुश नहीं हैं। मेरी नानी और दादी खुश नहीं हैं क्योंकि फिर से बेटी हुई है। पर वो भी तो महिला हैं, कभी किसी की बेटी थीं न! अभी उन्हें इच्छा रहती है कि सभी उन्हें आदर दें, फिर वो क्यों फूल-सी मेरी बहन को प्यार और सम्मान नहीं दे पाते? भयभीत.हूँ। कहाँ चला गया मेरा भाई? लोग कहते हैं कि वह भगवान के पास चला गया। भगवान के पास क्यों चले जाते हैं बच्चे? मुझे उसकी बहुत याद आ रही है। मन करता है फूट-फूट कर रोऊँ।

(ओम शान्ति कहकर गिटार ने अपनी बात पूरी की, अब वायलीन की बारी है)

वायलीन – बाबा, ''इस बच्चे की ड्रेस अच्छी नहीं है'' या ''इसकी नाक कितनी चपटी है'' या ''यह कितना मोटा है'' – इस तरह के आक्षेप लोग अक्सर करते हैं, इससे मुझे बहुत दुख होता है। मैं जैसा हूँ, उसी रूप में लोग मुझे प्यार क्यों नहीं कर पाते? बाबा, आपके ज्ञान ने मेरे में बहुत परिवर्तन कर दिया है। बाबा, ''मैं शरीर नहीं बल्कि परम शक्तिशाली आत्मा हूँ'' इस ज्ञान से मुझमें अद्‌भुत परिवर्तन आया है। मैं आपका सबसे प्यारा बच्चा हूँ।

बाबा, आज मैं बहुत दुखी हूँ। कारण है, मैं अब तक सोचती थी कि लोग एक आँख से ही देखते हैं, तो मुझे तसल्ली थी पर आज मुझे पता चल गया कि वैसा सोचना मेरी भूल थी। दरअसल लोग दोनों आँखों से देखते हैं। यह जानकर मैं बहुत डर गई हूँ। मुझे आज पता चला है कि मेरी दाहिनी आँख में भी रोशनी होनी चाहिए थी। उसमें नहीं है तो यह सामान्य बात नहीं है। क्या करूँ? क्या न करूँ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है, बाबा, आपसे कह दिया सो कह दिया पर किसी और को मैं यह बात बता नहीं पाऊँगी, अपने माता-पिता को भी नहीं क्योंकि यह जानकर उन्हें बहुत दुख होगा और मैं उन्हें दुखी नहीं करना चाहती।

(पर्दा गिरता है, नेपथ्य में अलार्म बजने की आवाज आती है फिर बन्द हो जाती है, एक नारी स्वर गूंजता है)

प्रात: 3.30 बजे मेरे उठने का समय हो गया है। गुड मॉर्निंग बाबा, बहुत-बहुत धन्यवाद कि मैं अच्छी तरह सोई। पर इतनी देर से मैं सपने देख रही थी। यहाँ तो कोई बच्चा नहीं है। वाह रे मेरा भाग्य! जो बच्चों को निस्संकोच होकर बाबा से बातें करते देखा और सुना।

समाप्त